सामाजिक परिवर्तन के प्रौद्योगिकीय कारक

Miss. CHHAYA
ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF SOCIOLOGY
J.K.P.(PG) COLLEGE MUZAFFARNAGAR

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रस्तावना :-

प्रौद्योगिकी सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली कारक है। प्रौद्योगिकी समाज को अनेक प्रकार से प्रभावित करती है, क्योंकि प्रौद्योगिकी में कोई भी परिवर्तन किसी संस्था अथवा समूह में परिवर्तन का कारण बनता है।

प्रौद्योगिकी का अर्थ एवं परिभाषाएँ :-

प्रौद्योगिकी जनित क्रान्ति ने सामाजिक क्रान्ति को जन्म दिया। सामाजिक क्रान्ति का बहुत अच्छा दृष्टान्त थर्सटीन वेबलीन का विलास अर्थात फुरसत का सिद्धान्त है।

ऑगबर्न का कथन है, "प्रौद्योगिकी समाज को हमारे पर्यावरण में परिवर्तन द्वारा जिसके प्रति हमें अनुकूलित होना पड़ता है, बदलती है। यह परिवर्तन प्रायः भौतिक आयामों में आता है तथा हम इन परिवर्तनों के साथ जो अनुकूलन करते है, उससे प्रथाओं एवं सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन हो जाता है।"

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

उत्पादन - प्रौद्योगिकी में परिवर्तन

प्रौद्योगिकी की उन्नति के सम्मुख हमारी मनोवृत्तियाँ, विश्वास, रीति-रिवाज शिथिल हो गये हैं। श्रमिकों की चेतना, सामाजिक वर्गों की दैवी व्यवस्था, रीति-रिवाज तथा जन्म की प्रतिष्ठा सभी प्रौद्योगिकी के विकार हुए हैं। औद्योगिक युग में स्त्रियों की प्रस्थिति का उदाहरण लिया जा सकता है। औद्योगिकवाद ने उत्पादन की घरेलू प्रणाली को नष्ट कर स्त्रियों को घर से कार्यशाला एवं कार्यालय में पहुँचा कर उनकी आय को विभेदित कर दिया है।

संचार - प्रौद्योगिकी में परिवर्तन

आधुनिक संचार - प्रविधियों में परिवर्तनों का सामाजिक जीवन पर प्रभाव उत्पादन - प्रौद्योगिकी में परिवर्तनों के प्रभाव के समान है परन्तु संचार - साधनों में परिवर्तनों का अतिरिक्त प्रभाव भी पड़ता है, क्योंकि जिस प्रयोग में वे लाए जाते हैं, उनका स्वयं सामाजिक महत्व होता है। सभी संचार - विधियों का मूल कार्य समय एवं दूरी पर विजय प्राप्त करना है। संचार की प्रविधियों उन संगठनों, जिनका मनुष्य विकार कर सकता है के क्षेत्र को तथा पर्याप्त सीमा तक उनके स्वरूप को सीमित कर देती हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

यातायात - प्रौद्योगिकी में परिवर्तन

यातायात के साधनों में परिवर्तन अथवा उन्नति दूरी पर भौतिक विजय है। यातायात के साधन एवं ढंग इस बात का निर्धारण करते हैं कि मनुष्य कितनी सुगमता से आ-जा सकते हैं तथा कितनी सुगमता से दूसरे स्थानों अथवा समाजों के लोगों से विचारों अथवा वस्तुओं के आदान-प्रदान हेतु सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन पर प्रभाव

आधुनिक प्रौद्योगिकी ने पारिवारिक संगठन एवं सम्बन्धों को निम्नलिखित प्रकार से प्रभावित किया है —

(i) प्रौद्योगिकी ने संयुक्त परिवार प्रणाली के विघटन में योगदान दिया है।

(ii) स्त्री और पुरुष दोनों के नौकरी करने से बच्चों के समाजीकरण पर कुप्रभाव पड़ा है।

(iii) प्रौद्योगिकी ने स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 'स्त्री मुक्ति आन्दोलन' प्रौद्योगिकी को परिणाम है।

(iv) प्रेम-विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, विलम्ब से विवाह प्रौद्योगिकी के अन्य प्रभाव है।

(v) संतति-नियंत्रण के साधनों के आविष्कार ने परिवार के आकार को कम कर दिया है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

आर्थिक जीवन पर प्रभाव

इसके प्रभाव निम्न-लिखित हैं —

(i) उद्योग धंरेलू नहीं रह गए हैं। अब कार्यशालाओं, एजेन्सियों, भंडारों, बैंकों आदि जैसे आर्थिक संगठनों का विकास हुआ है।

(ii) इसने पूँजीवाद एवं इसकी सब बुराइयों को जन्म दिया है।

(iii) इसने जीवन-स्तर में वृद्धि की है।

(iv) श्रम-विभाजन एवं विशेषीकरण प्रौद्योगिकी की उपज हैं।

(v) इसने आर्थिक मंदी, बेकारी, औद्योगिकी संघर्षों, दुर्घटनाओं एवं रोगों को जन्म दिया है।

(vi) इसने श्रमिकसंघ आन्दोलन को जन्म दिया है।

सामाजिक जीवन पर प्रभाव

इसके प्रभाव निम्नलिखित हैं —

(i) प्रौद्योगिकीय विकास से सामुदायिक जीवन का ह्रास हुआ है।

(ii) इससे व्यक्तिवादिता की भावना में वृद्धि की है।

(iii) प्रौद्योगिकीय विकास ने नगरों में मकानों एवं गन्दी बस्तियों की समस्या को जन्म दिया है।

(iv) मनोरंजन का व्यापारीकरण हो गया है।

(v) प्रौद्योगिकीय विकास ने जन्म से लेकर मृत्यु तक सामाजिक स्तरीकरण के आधार को बदल दिया है।

(vi) जाति-व्यवस्था के बंधनों को शिथिल कर दिया है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

राज्य पर प्रभाव

प्रौद्योगिकी राज्य को निम्नलिखित प्रकार से प्रभावित करती है -

(i) अनेक कार्य परिवार से राज्य को हस्तांतरित हो गए है समाज कल्याण की अवधारणा प्रौद्योगिकी की उपज है राज्य के कार्यक्षेत्र में भी वृद्धि हुई है।

(ii) राज्य पर दबाव-समूहों का प्रभाव बढ़ गया है।

(iii) स्थानीय शासन के कार्य केन्द्रीय सरकार के पास आ गए है।

(iv) राष्ट्रवाद के अवरोधक चूर-चूर हो गए है तथा विश्व राज्य का विचार बल पकड़ रहा है।

(v) प्रजातंत्र शासन का सामान्य रूप बन गया है।

धार्मिक जीवन पर प्रभाव

वैज्ञानिक ज्ञान की वृद्धि होने से अंधविश्वास समाप्त हो रहे है। अब धार्मिक सहनशीलता अधिक मात्रा में पाई जाती है विभिन्न धर्मों के अनुयायियों ने अपनी रूढ़िवादिता को समाप्त करके दूसरे धर्मों के लोगों के साथ उठना-बैठना आरम्भ कर दिया है। धर्म अब अधिक वैज्ञानिक एवं लौकिकीकृत बन गया है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सारांश

प्रौद्योगिकी सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त कारक है प्रौद्योगिकी समाज को अनेक प्रकार से प्रभावित करती है। प्रौद्योगिकी में कोई भी परिवर्तन प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से किसी संस्था अथवा समूह में परिवर्तन के लिए उत्तरदायी होता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner